चना
(GRAM)

चना प्रदेश में सर्वाधिक क्षेत्रफल में उगायी जाने वाली रबी दलहनी फसल है। इसमें 20–21 प्रतिशत प्रोटीन के साथ पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम, लोहा व नियासिन पाया जाता है। उन्नत तकनीक व प्रजातियाँ अपनाकर चने के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है।

प्रजातियाँ

समय से बोआई : पूसा–256, अवरोधी, के –850, डी.सी.पी. –92–3 (उकठा अवरोधी) पी.जी.–114, के.जी.–1168, टा0–3, के– 486, के.डब्लू.आर.–108, करनाल चना (ऊसर क्षेत्रों के लिये)

देर से बोआई – सद्भावना (डब्ल्यू.सी.जी. 1), सूर्या (डब्ल्यू.सी.जी.–2), उदय, पन्त जी– 186, पूसा– 372, पी.डी.पी. 84–10, पूसा– 1103, आई.पी.सी.– 9767

काबुली चना : सदाबहार, के – 4, एल–550, पूसा– 267, पूसा हरा चना, पूसा– 1003, प्रगति , बी.जी.डी.– 128

बीज एवं बोआई

बोआई का समय	बीज दर (प्रति हेक्टेयर)	बीज शोधन	बोआई की दूरी
समय से बोआई : 20 अक्टूबर-10 नवम्बर देर से बोआई : 10-30 नवम्बर	छोटे दाने - 75-80 किलोग्राम बड़े दाने - 90-100 किलोग्राम	ट्राइकोडर्मा हरजेनियम 4 ग्राम व वीटावैक्स 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज / राइजोबियम कल्चर उपचार	सिंचित / काबुली 40-45X10सेंमी, असिंचित / देर से बोआई 30X10सेंमी

समय से पहले बोआई करने पर वानस्पतिक वृद्धि अधिक होती है, फलियाँ कम बनती हैं और उकठा रोग अधिक लगता है। राइजोबियम कल्चर से उपचारित बीज की बोआई शाम को या प्रातः करनी चाहिये।

उर्वरक प्रबन्धन

बोआई के समय (प्रति हे0)	44-55 किलोग्राम यूरिया	250-375 किलोग्राम एस.एस.पी.	34 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश
अथवा			
प्रति हे0 100-150 किलोग्राम डी.ए.पी. एवं 200 किलोग्राम जिप्सम भी प्रयोग कर सकते है।			

जल प्रबन्धन

जाड़े की वर्षा न होने पर 5-6 सेंमी गहरी प्रथम सिंचाई बोआई के 45 दिन बाद (फूल आने के पहले) तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाना भरते समय करनी चाहिये। फसल में फूल आते समय कभी भी सिंचाई न करें।

खरपतवार नियन्त्रण

अच्छे वायु संचार व खरपतवार नियन्त्रण के लिये बोआई के 25-30 दिन बाद एक निराई करके गुड़ाई तथा पुनः पहली सिंचाई के बाद ओट आने पर हल्की गुड़ाई करनी चाहिये। खरपतवारों के रासायनिक रोकथाम के लिये पेण्डीमेथीलीन 3.3 लीटर 1000 लीटर पानी मे घोलकर बोआई के बाद 2 दिन के अन्दर छिड़काव करना चाहिये।

पौधों की खुटाई

पौधों के 20 सेंमी ऊँचाई के होने पर उनकी शीर्ष शाखायें तोड़ देनी चाहिये। परन्तु यह क्रिया वहीं करते है जहाँ पौधों की वानस्पतिक वृद्धि बहुत अधिक होती है।

एकीकृत रोग-कीट प्रबन्धन

उकठा रोग : यह चने की प्रमुख बीमारी है। उकठा रोग के लक्षण शुरु से पौधों के बड़ा होने तक दिखाई पड़ते हैं। इस रोग में पत्तियाँ पीली पड़नी शुरु होती हैं और पौधा मुरझाकर सूख जाता है। जड़े काली होकर सड़ जाती हैं।

प्रबन्धन : इसके लिये दीर्घकालीन फसल-चक्र, गहरी जुताई, देर से बोआई, रोग रोधी प्रजातियाँ जैसे अवरोधी बी.जी.-256, के.-850, पूसा-212, पूसा-372, प्रगति, डी.सी.पी.-92-3 व अलसी के साथ सहफसली खेती लाभप्रद है। वीटावैक्स एक ग्राम मात्रा को 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा के साथ मिलाकर प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करें।

एस्कोकाइटा रोग : इस रोग में जड़ के अतिरिक्त समस्त पौधा प्रभावित होता है। इसमें पत्तियों, शाखाओं व फूलों पर भूरे धब्बे बनते है, जिससे फलियाँ नहीं बनती हैं।

प्रबन्धन : रोग अवरोधी प्रजाति जैसे पूसा–372 के शुद्ध बीज के बोआई, तीन साल का फसल–चक्र, खरीफ में धान की खेती अलावा प्रति हेक्टेयर मैंकोजेब 2.0 किलोग्राम अथवा जीरम 27 प्रतिशत 3.5 लीटर का फूल आने के पूर्व और उसके दस दिन बाद दूसरा छिड़काव करें।

कालर राट : अधिक नमी वाले क्षेत्रों में सामान्यतः पौधो की प्रारम्भिक अवस्था में यह रोग लगता है। बड़े पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ जाती है, पौधा सूख जाता है। कवक से होने वाला यह रोग भूमि से उत्पन्न होता है।

प्रबन्धन : इसके नियन्त्रण के लिये सीमित नमी में बोआई रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जलाना तथा भूमि में ब्रेसीकाल कवक नाशक दवा प्रति हेक्टेयर 15–20 किलोग्राम की दर से मिलाना चाहिये।

कटुआ कीट : कटुआ कीट की गिडारें दिन में देलों में छिपी रहती है और रात में पौधों को जमीन की सतह से काटती हैं।

प्रबन्धन : बोआई से पूर्व लिण्डेन 1.3 प्रतिशत चूर्ण 30 किलोग्राम /हेक्टेयर जमीन में मिलायें।

फली छेदक : फली छेदक कीट की गिडारे फलियों में छेद करके अपने सिर को फलियों के अन्दर डालकर दाने को खाती हैं और एक फली के दानों को खाने के बाद दूसरी फली पर चली जाती हैं। इस कीट द्वारा चने की उपज में 75 प्रतिशत तक कमी हो जाती है।

प्रबन्धन : इसके नियन्त्रण हेतु नीम के बीजों की सत 5 प्रतिशत या इण्डोसल्फान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

xfrfof/k pkV

tyok;
BMk] ikyk jfgr LoPN ekle]
okf"kd o"kk 60&90 leh

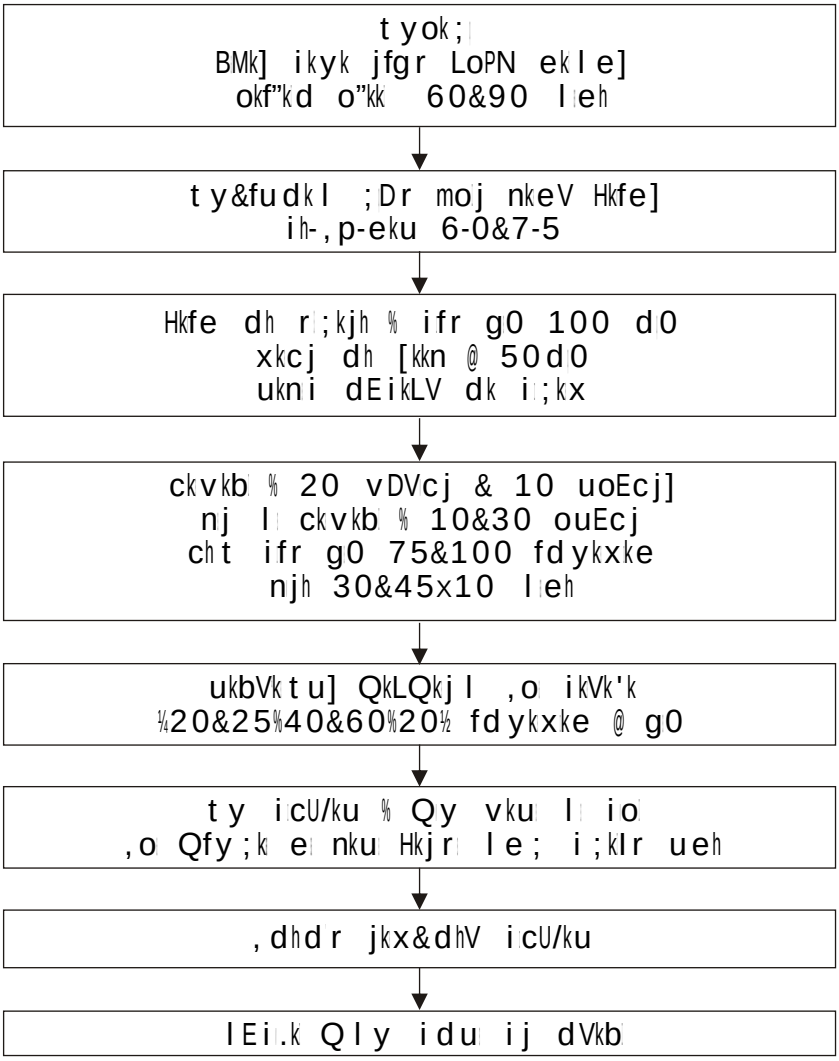

↓

ty&fudkl ;Dr moj nkeV Hkfe]
ih-,p-eku 6-0&7-5

↓

Hkfe dh r;kjh % ifr g0 100 d0
xkcj dh [kkn @ 50d0
ukni dEikLV dk i;kx

↓

ckvkb % 20 vDVcj & 10 uoEcj]
nj l ckvkb % 10&30 ouEcj
cht ifr g0 75&100 fdykxke
njh 30&45x10 leh

↓

ukbVkstu] QkLQkjl ,o ikVk'k
¼20&25%40&60%20½ fdykxke @ g0

↓

ty icU/ku % Qy vku l io
,o Qfy;k e nku Hkjr le; i;kIr ueh

↓

,dhdr jkx&dhV icU/ku

↓

lEi.k Qly idu ij dVkb

ifr gDV;j puk dh [krh dk vk;&0;; ¼o"k 2009½

mRikn	mit ¼d0@g0½	fod; nj ¼:0@d0½	lEi.k vk; ¼:0@g0½	mRiknu ykxr ¼:0@g0½	'k) vk; ¼:0@g0½	ykHk ykxr vuikr
nkuk	25	1730	43250	13000	30250	3-3%1